सच्चाई के दम पर जोश के साथ...

RNI No: UPHIN/2023/86769

www.swarajindianews.com

swarajindia2023@gmail.com swarajindianews swarajindianews

मूल्य: ₹ 02

स्वराज इंडिया

सांध्यकालीन समाचार पत्र

कानपुर,सोमवार , 02 जून, 2025
वर्ष: 02, अंक: 154, पृष्ठ: 8+4

इनसाइड जीजा साले सरहज सहित चालक की हादसे में दर्दनाक मौत » Pg08

कृतज्ञता और गर्व से भर गया, विदाई के बाद पूर्व डीजीपी ने लिखी ये भावुक पोस्ट » Pg10

पतंजलि आयुर्वेद को हाईकोर्ट से बड़ा झटका

» बाबा रामदेव की कंपनी को कोर्ट के आदेश पर भरनी पड़ेगी 273 करोड़ की जीएसटी पेनाल्टी?

» कोर्ट ने कहा कि टैक्स अथॉरिटी जीएसटी ऐक्ट के तहत पेनाल्टी लगा सकती है, जिसके लिए ट्रायल की जरूरत नहीं है

मुख्य संवाददाता स्वराज इंडिया

प्रयागराज। यूपी की इलाहाबाद हाईकोर्ट ने बाबा रामदेव की कंपनी पतंजलि आयुर्वेद को तगड़ा झटका दिया है। कंपनी की ओर से हाईकोर्ट में 273.5 करोड़ रुपये के जीएसटी नोटिस खिलाफ याचिका दाखिल की गई थी, जिसको कोर्ट ने सोमवार को खारिज कर दिया है।

कोर्ट ने पंतजलि को उस दलील को मानने से इनकार कर दिया, जिसमें कंपनी ने कहा कि क्रिमिनल ट्रायल होने के बाद ही ऐसी पेनाल्टी लगनी चाहिए। सुनवाई करते हुए कोर्ट ने कहा कि टैक्स अथॉरिटीज की ओर से जीएसटी ऐक्ट के सेक्शन 122 के तहत पेनाल्टी लगाई जा सकती है। इसके लिए ट्रायल की जरूर नहीं है ।जस्टिस शेखर बी सर्राफ और जस्टिस विपिन चंद्र दीक्षित की बेंच ने सोमवार को दायर याचिका पर सुनवाई की। कोर्ट ने कहा कि जीएसट की पेनाल्टी का मामला सिविल प्रकृति का है। इसमें क्रिमिनल ट्रायल की कोई जरूर नहीं है। जीएसटी अधिकारी कार्रवाई को आगे बढ़ सकते हैं।

इसके लिए मुकदमे की जरूरत नहीं है। उत्तराखंड के हरिद्वार, हरियाणा के सोनीपत और महाराष्ट्र के अहमदनगर में पतंजिल आयुर्वेद लिमिटेड की तीन यूनिट्स हैं। जहां संदिग्ध लेने-देने की जानकारी मिली थी। इनपुट ट्रैक्स क्रेडिट (आईटीसी) की उपयोगिता तो अधिक थी, लेकिन उनके पास कोई आयकर दस्तावेज नहीं थे ।पतंजलि आयुर्वेद कंपनी को डायरेक्टोरेट जनरल ऑफ गुड्स ऐंड सर्विसेज टैक्स (ष्ठत्रत्रस्ञ्ज) इंटेलिजेंस ने 19 अप्रैल 2014 को कारण बताओ नोटिस दी थी, जिसमें 273.5 करोड़ रुपये की पेनाल्टी लगाई थी। 10 जनवरी को नोटिस को वापस ले ली गई थी। जीएसटी ने पाया कि सभी वस्तुओं के मामले में आपूर्तिकर्ताओं से खरीदी गई मात्राओं की तुलना में बेची गई मात्रा हमेशा अधिक थी। विवादित वस्तुओं पर प्राप्त की गई आईटीसी को याचिकाकर्ता की ओर से आगे स्थानांतरित कर दिया गया था। इसके बाद जीएसटी अधिकारियों ने धारा 122 के तहत दंडात्मक कार्रवाई जारी रखने का निर्णय लिया। जिसे पतंजलि आयुर्वेद कंपनी की ओर से हाईकोर्ट में चुनौती दी गई थी।

सीएम योगी तक पहुंचा सीनियर आईआरएस अफसरों का विवाद

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में इनकम टैक्स विभाग के दो वरिष्ठ अधिकारियों के बीच हुए विवाद ने अब प्रशासनिक हलकों में गंभीर चिंता पैदा कर दी है। आईआरएस अधिकारी योगेंद्र मिश्रा और गौरव गर्ग के बीच 29 मई को प्रत्यक्ष कर भवन लखनऊ में हुई कथित मारपीट की घटना के बाद मामले ने नया मोड़ ले लिया है। अब योगेंद्र मिश्रा ने सीधे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और यूपी डीजीपी को पत्र लिखकर पुलिस सुरक्षा, निष्पक्ष जांच की मांग की है। साथ ही, आरोपी अधिकारी गौरव गर्ग की पत्नी आईपीएस रवीना त्यागी का तत्काल तबादला करने की भी मांग की है। उनका दावा है कि आईपीएस पत्नी लखनऊ पुलिस में अपने रसूख के दम पर मामले को अलग रूप देने की कोशिश कर सकती हैं।29 मई 2025 को लखनऊ के प्रत्यक्ष कर भवन में हुई एक बैठक के दौरान योगेंद्र मिश्रा और गौरव गर्ग के बीच विवाद इतना बढ़ गया कि मामला हाथापाई तक पहुंच गया। योगेंद्र मिश्रा का आरोप है कि उन्हें गौरव गर्ग ने कई लोगों की मौजूदगी में थप्पड़ मारा। उन्हें गाली दी और सार्वजनिक रूप से अपमानित किया। इस घटना की सीसीटीवी फुटेज और प्रत्यक्षदर्शियों के बयान भी उनके पास मौजूद हैं।

योगेंद्र मिश्रा का आरोप है कि गौरव गर्ग ने उनके ऊपर पहले हमला किया। इसके बचाव में उनकी उंगली में पहनी अंगूठी चेहरे पर लग गई। इसे गौरव गर्ग की ओर से हमला करार दिया गया। दूसरी तरफ, गौरव गर्ग ने पानी से भरा ग्लास फेंककर मारने, गला दबाने और पेपरवेट से हमले जैसे आरोप लगाए हैं।

» मामले में योगेंद्र मिश्रा ने सीएम योगी और डीजीपी से गौरव गर्ग की पत्नी आईपीएस रवीना त्यागी के तबादले की मांग की है

पुलिस पर पक्षपात के आरोप

घटना के बाद योगेंद्र मिश्रा ने लखनऊ पुलिस कमिश्नर को 9 पृष्ठों की विस्तृत शिकायत सौंपते हुए 4 दस्तावेज भी संलग्न किए। योगेंद्र मिश्रा का आरोप है कि शिकायत दर्ज होने के बावजूद उनके खिलाफ एक पीआर-प्रबंधित मीडिया अभियान चलाया जा रहा है, जिससे उनकी छवि को धूमिल किया जा रहा है। इसमें गौरव गर्ग की आईपीएस पत्नी रवीना त्यागी का भी हाथ होने का दावा वे कर रहे हैं।

योगेंद्र मिश्रा ने आरोप लगाया है कि घटना के बाद से उनकी नाबालिग बेटी का पीछा किया गया। उसकी तस्वीरें ली गई और उनके परिवार को डराया-धमकाया जा रहा है। उन्होंने यह भी बताया कि 30 मई को बिना किसी सूचना के दो पुलिसकर्मी उनके कानपुर स्थित घर पहुंच गए। जिससे माहौल खराब हो रहा है।

वीसी के निर्देश ठेंगे पर, जुगाड़तंत्र से अवैध निर्माण

फोटो झूठ नहीं बोलती है...कानपुर विकास प्राधिकरण के रिकॉर्ड में निर्माण कार्य बंद कर दिया गया है लेकिन ताजा फोटो कल की है इसमें देखिए किस तरह से फिनिशिंग चल रही है।

स्वराज इंडिया www.swarajindianews.com कानपुर सिटी कानपुर, शुक्रवार 11 अप्रैल, 2025 04

केडीए अफसरों की सरपरस्ती से दीपू चौहान फूड कोर्ट का अवैध निर्माण जारी

» जिला पंचायत के नक्शे से हो रहे निर्माण में केडीए नहीं कर पा रहा है कार्रवाई

» अफसर कर रहे बहानेबाजी, तेजी से अवैध निर्माण का कार्य हो रहा पूरा

» अवैध निर्माण के बदले लाखों रूपए की डील की आशंका

प्रमुख संवाददाता, स्वराज इंडिया

कानपुर। अवैध और अनाधिकृत निर्माणों को लेकर उप्र की योगी सरकार सख्ती बरत रही है लेकिन अधिकारियों की मिलीभगत से सरकार की मंशा पर पानी फिर रहा है। कानपुर शहर में मानकों को ताकपर रखकर दनादन अवैध निर्माण कराए जा रहे हैं।

इससे शहर की यातायात व्यवस्था के साथ साथ भविष्य में अन्य हादसों को लेकर खतरा बनता जा रहा है। केडीए में तैनात कई अधिकारी प्रवर्तन के नाम पर मुंह तो बनाते हैं लेकिन उसके बिना गुजारा नही होता है। कई निर्माणों में अफसरों एवं इंजीनियरों की मिलीभगत से बडे भ्रष्टाचार की आशंका है।

केडीए वीसी मदन सिंह गर्ब्यालय ने बीते दिनों अवैध और अनाधिकृत निर्माणों पर सख्ती करके शमन शुल्क वसूली के निर्देश दिए लेकिन उनका असर प्रवर्तन में नहीं दिख रहा है।

कागजी कार्रवाई का खेल चल रहा है। जोन-2 में भौंती हाइवे के पास पिछले छह माह से बिना नक्शे के नियम कायदे ताकपर रखकर दीपू चौहान फूड का निर्माण किया जा रहा है।

परिसर से ही हाईटेंशन लाइन गुजरी हुई है। वहीं जब कार्रवाई के बावत जिम्मेदार अधिकारियों से पूछा जाता है तो फाइल की कार्रवाई के लिए प्रवर्तन अनुभाग में भेज दी गई है लेकिन ऐसा लगता है।

अवैध निर्माण को बचाने के लिए कार्रवाई के नाम पर मीठी गोली दी जा है।

वहीं, इस संबंध में ओएसडी डा0 रवि प्रताप सिंह से पूछा गया तो उन्होने बताया कि शमन की नोटिस दे दी गई है।

जब कि मौके पर दनादन स्लैब डाली जा रही है और फिनिशिंग का कार्य चल रहा है।

ऐसे में सवाल उठता है कि केडीए के अधिकारी कार्रवाई के बजाय मामले को टरकाना चाहते हैं। वहीं, इसी तरह से कई इलाकों में निर्माण चल रहे हैं।

दीपू चौहान के फूड कोर्ट के अंदर नया अवैध निर्माण भी जोरों से चल रहा है

भौतिखेरा, उत्तर प्रदेश, भारत
F655+34, भौतिखेरा, उत्तर प्रदेश 208020, भारत
Lat 26.457707° Long 80.207584°
07/04/2025 04:30 PM GMT +05:30

का० वि० प्रा०

शहर में अवैध निर्माण पर नियंत्रण नही

शहरों में जाम और अतिक्रमण के पीछे सबसे बडा कारण अवैध निर्माण हैं। बिना पार्किंग और अन्य सुविधाओं के आवासीय एवं गालियों में शोरूम धडाधड बनाए जा रहे हैं और कई नक्शों में पार्किंग दी गई वहां पर भी दुकानें खोल दी गई हैं। कई जगह खोलने की तैयारी की जा रही हैं। इसके लिए केडीए और नगर निगम के अधिकारियों की जिम्मेवारी है लेकिन कोई झंझट नहीं लेना चाहते हैं। अपनी जेब भरे बाकी कोई मतलब नहीं है।

» केडीए के जिम्मेदार अधिकारियों की लाखों की डील से फिर से शुरू हुआ कार्य

» भौंती हाइवे पर स्थित दीपू चौहान फूड कोर्ट के

» अवैध निर्माण रोकने के निर्देश बेअसर

» जिला पंचायत से मैप स्वीकृति की खानापूरी कर हो रहा अवैध निर्माण

प्रमुख संवाददाता, स्वराज इंडिया

कानपुर। कानपुर विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष मदन सिंह गर्ब्याल के निर्देशों की धज्जियां उनके ही मातहत खुलेआम उडाने में जुटे हुए हैं। अवैध निर्माण एवं प्लाटिंग साइडस रोकने के लिए वीसी आए दिन मीटिंग कर सख्ती करते हुए कार्रवाई के निर्देश देते हैं लेकिन जिम्मेदार अधिकारी एक कान से बात सुनते हैं दूसरे से निकाल देते हैं।

मामला यह है कि शहरी सीमा के अंतर्गत भौति हाइवे के किनारे दीपू चौहान फूड का अवैध निर्माण पिछले कई सालों से चल रहा है। फूड कोर्ट के परिसर के उपर से हाईटेंशन के तार गुजरे हैं, इससे हादसे की संभावनाओं को नकारा नहीं जा सकता है। तत्कालीन वीसी अरविंद सिंह के कार्यकाल में उक्त फूड कोर्ट के निर्माण पर कारवाई शुरू की थी तो डर की वजह से काम बंद कर दिया गया था। बाद में निर्माणकर्ता जिला पंचायत का नक्शा बताकर कोर्ट चला गया था लेकिन इसके बाद भी निर्माण कार्य चोरी छिपे चलता रहा। वहीं, कोर्ट ने करीब 4 माह मामले प्रत्यावेदन की सुनवाई के लिए केडीए अफसरों को निर्देशित किया था। केडीए सचिव अभय पांडेय ने कोर्ट का प्रत्यावेदन खारिज करते हुए कहा कि शहरी सीमा के अंतर्गत जिला पंचायत के नक्शे मान्य नहीं है। यह निर्माण अवैध है उसकी कंपाउडिंग कराकर आगे का निर्माण किया जाए लेकिन इसके बाद भी निर्माणकर्ता ने अपने रसूक और धनबल की धौंस दिखाते हुए कार्य नहीं रोका। इसकी शिकायत वीसी तक पहुंची तो उन्होने केडीए प्रवर्तन अधिकारियों से कार्रवाई करने के निर्देश दिए। करीब 20 दिन पहले प्रवर्तन जोन-2 के प्रभारी डा0 रवि प्रताप सिंह ने बताया था कि स्थानीय पुलिस को पत्र जारी कर निर्माण रोकने के लिए निर्देशित किया गया है लेकिन फिर भी काम नहीं रोका गया।

अब उक्त प्रकरण में प्रबल सूत्रों का दावा है कि केडीए से जुडे वरिष्ठ अफसरों ने लाखों रूपयों की डील की है। इसमें एक अफसर और इंजीनियर सूत्रधार हैं। इसी वजह से कार्रवाई करने से बहानेबाजी की जा रही है। हालांकि, अवैध निर्माण का मामला शासन तक पहुंच गया है। वहां से भ्रष्टाचार करने वालों पर शिकंजा कस सकता है।

दीपू चौहान फूड कोर्ट के अवैध निर्माण की जानकारी नहीं है। सूचना के आधार पर जोनल अधिकारी डॉ रवि प्रताप सिंह को कार्रवाई के लिए अवगत कराया गया है।

अभय पाण्डेय, सचिव केडीए

फूड कोर्ट की जमीन में धांधली की आशंका !

स्थानीय सूत्रों का दावा है कि जिस जगह पर दीपू चौहान फूड कोर्ट बनाया जा रहा है वह जमीन एक सरदार जी की थी। वहां पर पहले पुराने टायर भंडारण किए जाते थे, जितनी जमीन खरीद में दिखाई गई है। उससे ज्यादा जमीन पर कब्जा कर निर्माण किया जा रहा है। बडे पैमाने पर जमीन स्वामित्व को लेकर खेल किए जाने की आशंका जताई जा रही है। इसी वजह से निर्माण कर्ता कंपाडिंग कराने से बच रहा है क्यों कि कंपाउडिंग में लाखों रूपया लगेगा साथ ही जमीन में किया गया खेल उजागर हो जाएगा और भू-स्वामित्व की एनओसी मिल पाना मुश्किल है। इसलिए भी शमनपत्र वापस लेने की बात कही जा रही है।

ग्राम समाज की जंगल जलौनी जमीन के खेल का होगा खुलासा

स्वराज इंडिया संवाददाता को मिले गोपनीय इनपुट में भौंतीप्रतापपुर गांव स्थित ग्राम समाज की दो एकड से अधिक जलौनी वाली सुरक्षित जमीन के स्वामित्व में बडा खेल किया गया है। इसमें कानपुर सदर तहसील में तैनात रहे एसडीएम हिमांशु गुप्ता की कृपा से सरकारी जमीन हडप ली गई। इसमें तमाम शिकायतों की अनदेखी की गई। इसका खुलासा भी स्वराज इंडिया जल्द करेगा।

शोध में सामने आए तथ्यः कोरोना का दंश... साल भर तक न स्वाद, न सुगंध

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर। जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज के नाक, कान, गला रोग विभाग में 50 रोगियों पर अध्ययन किया गया। जिसमें सामने आया कि संक्रमण ठीक होने के बाद सूंघने की क्षमता प्रभावित रही।

जीभ की टेस्ट बड्स भी प्रभावित रही।कोरोना ने पुरुषों की गंध अनुभूति पर अधिक असर डाला। संक्रमण ठीक होने के एक से सवा साल तक रोगियों के सूंघने की क्षमता प्रभावित रही है। उन्हें अच्छी और खराब दोनों तरह की खुशबू पता न चली। इसके साथ ही जीभ की टेस्ट बड्स प्रभावित होने से खाने के स्वाद का भी मजा नहीं मिला। यह तथ्य जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज के नाक, कान, गला रोग विभाग के एक अध्ययन में पता चला है इस अध्ययन में कोरोना से ठीक हो गए 50 रोगियों को शामिल किया गया। इनकी जांच में पाया गया कि कोरोना संक्रमण के कारण ओल्फेक्टरी संसेशन प्रभावित हुआ। नाक, कान, गला रोग विभाग के इस अध्ययन 28 पुरुष और 22 महिलाएं शामिल रहीं। कोरोना संक्रमण जब ठीक हुआ तो इसके प्रभाव की जांच की गई। इसमें पाया गया कि नाक के ऊपरी और मस्तिष्क के निचले हिस्से के बीच संक्रमण का प्रभाव आया। यहीं से तंत्रिकाएं नाक के गंध अनुभूति क्षेत्र से होकर मस्तिष्क में जाती हैं।जब तंत्रिकाओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा तो गंध का मैसेज मस्तिष्क पहुंचने में बाधित हुआ। इससे व्यक्ति को गंध आनी बंद हो गई। गंध अनुभूति क्षेत्र जब प्रभावित होता है तो इसका प्रभाव टेस्ट बड्स पर आता है।

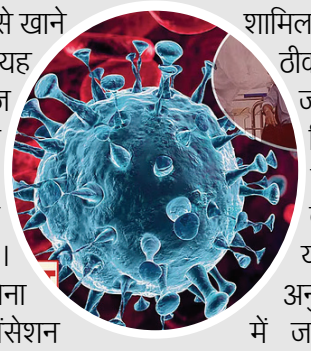

इससे स्वाद पता चलने की प्रक्रिया भी बाधित होने लगती है। यह शोध विभागाध्यक्ष डॉ. एसके कनौजिया और डॉ. अमृता श्रीवास्तव की देखरेख में डॉ. काजी साकिब ने किया। डॉ. साकिब ने बताया कि कोरोना संक्रमण कोशिकाएं क्षतिग्रस्त होने लगती हैं। ओल्फेक्टरी एपीथीलियम पर असर आता है।

बारिश से पहले नाला सफाई पर ख़ास फोकस: नगर आयुक्त

» नगर आयुक्त सुधीर कुमार ने नाला सफाई का किया औचक निरीक्षण, कहा कि लापरवाही करने वाले दंडित होंगे

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर। आगामी वर्षा ऋतु को देखते क्षेत्रीय जनमानस को जलभराव व जल जमाव आदि समस्या से निजात दिलाए जाने के लिए नगर आयुक्त सुधीर कुमार द्वारा परम्परागत रूप से चलाए जा रहे नाला सफाई के कार्य का औचक निरीक्षण किया गया ।

निरीक्षण के दौरान अपर नगर आयुक्त मोहम्मद आवेश खान व मुख्य अभियंता व अन्य वरिष्ठ अधिकारी गण मौजूद है।

सर्वप्रथम रावतपुर रेलवे स्टेशन से गीता नगर क्रासिंग तक नाली सफाई का कार्य का निरीक्षण किया गया, जिस पर जोनल स्वच्छता अधिकारी जोन-6 को निर्देशित किया गया सिल्ट उठान का कार्य जल्द से जल्द कराया जाए।

जिससे जनमानस को आवागमन में किसी भी प्रकार की बाधा उत्पन्न न हो। मस्वानपुर कर्बला मैदान के पास नाला सफाई के कार्य का निरीक्षण किया गया, मौके पर मशीन द्वारा कार्य होते पाया गया , नगर आयुक्त द्वारा जोनल अभियंता-6 आर0 के0 सिंह निर्देश दिए गए की नाले की सिल्ट उठान का कार्य जल्दी कराया जाए जिससे गंदगी पुन: नाले में ना जाए व सुरक्षा मानकों का विशेष ध्यान रखा जाए, जिससे जनमानस को किसी भी समस्या का सामना न करना पड़े।

इसी क्रम में पनकी वार्ड-57 में अवधेश पांडे के मकान से पनकी गौशाला तक नाला सफाई के कार्य का मुआयना किया गया,मौके पर मशीन द्वारा कार्य होता पाया गया, जिसपे नगर आयुक्त द्वारा जोनल अभियंता-5 कमलेश पटेल को निर्देशित किया गया कि बांध लगा कर सफाई का कार्य कराया जाए। जोन 3 में केस्को स्टेशन चौराहे का निरीक्षण किया गया जिस पर धंसी हुई पुलिया का पुन: निर्माण करने के लिए मुख्य अभियंता को निर्देशित किया गया । इसी क्रम में संजय वन के समीप स्वास्थ्य विभाग की नाली पर मिट्टी भरी पाई गई , जिस पर नगर आयुक्त द्वारा जोनल स्वच्छता अधिकारी जोन-3 को मिट्टी/सिल्ट को तत्काल हटवा कर साफ सफाई कराने के लिए निर्देशित किया गया ।

पीएम ने नहीं डाली लाल इमली पर रोशनी, मिल चलने की उम्मीद हुई धुंधली

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर। ब्रिटिश इंडिया कॉरपोरेशन (बीआईसी) के अधीन संचालित होने वाली लाल इमली मिल चलने की उम्मीद धुंधली पड़ रही है। प्रधानमंत्री से उम्मीद लगाए बैठे लाल इमली मिल कर्मचारी निराश हैं। शहर आए प्रधानमंत्री ने कानपुर के चमड़ा, एमएसएमई पर बात की लेकिन मिल के संबंध में कुछ भी नहीं कहा।

पिछले साल अगस्त में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मिल चलाने के लिए पैकेज देने की घोषणा की थी। इससे उम्मीद जगी थी कि जल्द ही मिल चलने लगेगी। इससे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सैकड़ों लोगों को रोजगार मिलेगा। अब तक कोई पैकेज घोषित भी नहीं किया गया है। केंद्र और प्रदेश सरकार के बजट भी आ चुके हैं।

इसके अलावा घोषणा के बाद कई बार मुख्यमंत्री शहर भी आए, लेकिन मिल के संबंध में कोई बात नहीं की। अब पीएम के कोई चर्चा न करने से माना जा रहा है कि इसी साल के अंत तक या 2026 की शुरुआत में मिल पर बंदी पर मुहर लग सकती है। पहले बीआईसी को बंद किया जाएगा। एनटीसी को बांद में बंद किया जा सकता है।

संपत्तियों के मूल्यांकन के लिए भी कोई टीम नहीं आई। उधर, कर्मचारियों को 31 मार्च 2025 तक बकाया भुगतान की प्रक्रिया चल रही है। कानपुर में नेशनल टेक्सटाइल कॉरपोरेशन (एनटीसी) और ब्रिटिश इंडिया कॉरपोरेशन (बीआईसी) की 366 एकड़ जमीन है। एनटीसी की कानपुर में परेड स्थित म्योर मिल, ग्वालटोली स्थित न्यू विक्टोरिया मिल, जूही हमीरपुर रोड स्थित स्वदेशी कॉटन मिल और जरीब चौकी के पास अथर्टन मिल है। दर्शनपुरवा-फजलगंज स्थित लक्ष्मीरतन कॉटन मिल सालों पहले बंद है। अथर्टन मिल के एक हिस्से में एमएसएमई टेक्नोलॉजी सेंटर बनाया गया है। बीआईसी के अधीन लाल इमली, धारीवाल, कानपुर टेक्सटाइल और एल्गिन मिल एक और दो हैं। ये मिलें 66 एकड़ में बनी हैं।

बीआईसी-एनटीसी की संपत्तियां शहर के बेहद पॉश इलाकों में हैं। सिविल लाइंस, मकरावटगंज, वीआईपी रोड, ग्वालटोली, खलासी लाइन में मिलें और बंगले हैं। बीआईसी की ज्यादातर जमीनें नजूल की हैं, जो लीज पर दी गई हैं। लीज खत्म होने के साथ जिला प्रशासन उन पर कब्जा वापस ले रहा है। लाल इमली कर्मचारी संघ के अध्यक्ष अजय सिंह ने बताया कि उम्मीद थी कि मिल पर प्रधानमंत्री कुछ बोलेंगे, लेकिन कुछ भी नहीं कहा। उन्होंने मांग की कि मिल के कर्मचारियों का जल्द से जल्द पूरा भुगतान कराया जाए। जल्द ही शहर के सांसद से मिलकर मिल चलाने की बात रखी जाएगी।

लीज होल्ड की जमीनें राज्य सरकार को जाएंगी वापस

सूत्रों का कहना है कि लीज होल्ड जमीनें राज्य सरकार को वापस की जाएंगी। बताया गया कि सरकार में कैबिनेट नोट पर चर्चा की जा रही है, जो प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) के विचाराधीन है। पहले एनटीसी-बीआईसी को एक साथ बंद करने की रणनीति पर काम हो रहा था। एनटीसी की जमीनें कई राज्यों में होने और विधिक प्रक्रिया ज्यादा होने के चलते इसे बाद में बंद किया जा सकता है। बीआईसी को पहले बंद किया जा सकता है।

2013 से बंद है उत्पादन

बीआईसी के अधीन लाल इमली मिल में 2013 से उत्पादन बंद है। एनटीसी 344 करोड़ के घाटे में चल रही है। सूत्रों ने बताया कि, केंद्र एनटीसी, बीआईसी समेत नौ केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम को बंद कर सकता है। वित्त वर्ष 2024 से इनमें व्यावसायिक गतिविधि नहीं की जा रही है। बंदी के लिए कोई समय सीमा अभी तय नहीं की गई है।

सवालों के घेरे में कानपुर जिला प्रशासन की कार्यशैली

कानपुर में 30 मई 2025 को चंद्रशेखर आजाद विश्वविद्यालय परिसर में प्रधानमंत्री की जनसभा के कार्यक्रम को कवरेज करने हेतु दागी पत्रकारों को रोक दिया गया था लेकिन कुछेक दिन ही व्यतीत हुए हैं और जिला प्रशासन की कार्यशैली सवालों के घेरे में आ गई है।कानपुर में प्रधानमंत्री के हालिया कार्यक्रम के कवरेज को लेकर एक विवाद सामने आया है, जिसमें अनेक पत्रकारों को जन सभा कार्यक्रम स्थल में प्रवेश करने से रोकने हेतु मीडिया पास जारी नहीं किया गया । यह प्रतिबंध उन पत्रकारों पर लगाया गया था जिनके खिलाफ छुटपुट मामले तक दर्ज थे, भले ही वे मामले खत्म हो चुके हों या फिर न्यायालय में अभी भी लंबित हों।

जिला प्रशासन के इस कदम पर सवाल उठ रहे हैं, क्योंकि जिन पत्रकारों के खिलाफ छुटपुट मामले दर्ज थे, उन्हें कवरेज से रोक दिया गया, जबकि उन व्यक्तियों को प्रधानमंत्री से मिलने की अनुमति मिली जिनके खिलाफ संज्ञेय धाराओं (cognizable offenses) के तहत मुकदमे दर्ज हैं। (मुलाकात संबंधी फोटो वायरल हैं।) सत्तारूढ़ दल में रहते हुए उनके कुकृत्य सामने आने पर निकाला तक गया था। लेकिन पार्टी के पदाधिकारियों के चहेते होने के चलते उनके कुकृत्यों पर पर्दा डाल दिया गया था।

जिला प्रशासन का यह रवैया, दोहरे मापदंड (double standards) को उजागर करती है और प्रशासन की प्राथमिकताओं पर गंभीर प्रश्नचिह्न लगाता है।पत्रकारों को कवरेज करने से रोकना, भले ही उनके खिलाफ मामूली मामले हों, लोकतांत्रिक प्रक्रिया में प्रेस की स्वतंत्रता (freedom of the press) पर अंकुश लगाने जैसा है। प्रेस को जनता और सरकार के बीच एक सेतु माना जाता है, और उसे स्वतंत्र रूप से कार्य करने की अनुमति होनी चाहिए ताकि वह निष्पक्ष जानकारी प्रदान कर सके।दूसरी ओर, ऐसे व्यक्तियों को प्रधानमंत्री से मिलने की अनुमति देना जिनके खिलाफ गंभीर आपराधिक मामले दर्ज हैं, सुरक्षा प्रोटोकॉल और सार्वजनिक नैतिकता दोनों पर सवाल उठाता है। यह घटनाक्रम कानपुर में स्थानीय प्रशासन की कार्यशैली व निर्णय लेने की कार्यकुशलता पर सवालिया निशान लगाता है।

श्याम सिंह पंवार (कानपुर)

अब निपुण भारत मिशन के तहत शिक्षकों को किया जाएगा ट्रेंड

पांच दिवसीय प्रशिक्षण में प्रदेश भर के 4.7 लाख से अधिक प्राथमिक शिक्षक शामिल होंगे

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर। परिषदीय विद्यालयों में बच्चों की बुनियादी शिक्षा और गिनती की समझ को मजबूत करने के लिए अब शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाएगा। निपुण भारत मिशन के तहत इस पांच दिवसीय प्रशिक्षण में प्रदेश भर के 4.7 लाख से अधिक प्राथमिक शिक्षक शामिल होंगे। प्रशिक्षण का उद्देश्य कक्षा में पढ़ाने की गतिविधियों को और प्रभावी बनाना है। इसमें नई एनसीईआरटी आधारित किताबों की सामग्री, स्थानीय कहानियों, गतिविधि आधारित पढ़ाई और बच्चों को केंद्र में रखकर पढ़ाने की शैली को अपनाने पर जोर दिया जाएगा। राज्य स्तर से लेकर जिला और ब्लॉक स्तर तक प्रशिक्षित मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षण देने की जिम्मेदारी निभाएंगे। प्रशिक्षण से पहले और बाद में टेस्ट लेकर इसके प्रभाव का आकलन भी किया जाएगा। प्रशिक्षण की जानकारी और सामग्री यूट्यूब सत्रों, वाट्सएप ग्रुप्स और संकुल बैठकों के माध्यम से भी साझा की जाएगी। शिक्षकों को विशेष रूप से भाषा और गणित के जरूरी कौशल जैसे स्पष्ट बोलना, ध्वनि पहचान, पढ़ने की आदत, समझने की क्षमता और गणना की प्रक्रियाओं पर काम करना सिखाया जाएगा। इसके लिए उन्हें उचित शिक्षण सामग्री और अभ्यास की योजनाबद्ध तकनीक भी दी जाएंगी।

समझाया जाएगा जीआरआर माडल-

प्रशिक्षण में ग्रेजुअल रिलीज आफ रिस्पांसिबिलिटी (जीआरआर) माडल को समझाया जाएगा। इस पद्धति में शिक्षक पहले खुद करके दिखाते हैं फिर छात्रों को मार्गदर्शन देते हैं और बाद में उन्हें खुद अभ्यास करने देते हैं। इससे बच्चों की सीखने की गति बेहतर होती है। शिक्षकों को आकलन आधारित शिक्षण की भी ट्रेनिंग दी जाएगी। इसमें स्पाट मूल्यांकन, फार्मेटिव टेस्ट, समेकित मूल्यांकन और पुनरावृत्ति योजनाएं शामिल होंगी।

स्वराज इंडिया

www.www.swarajindianews.com.com

वैचारिक मंच

05

कानपुर,सोमवार 02 जून , 2025

सम्पादकीय

डराती है मामूली विवाद में सहपाठी की हत्या

हिसार में सहपाठी द्वारा प्रतिशोध में कक्षा दस के एक छात्र की गोली मारकर की गई हत्या ने हर संवेदनशील व्यक्ति को झकझोरा है। एक साल पहले स्कूल में डेस्क पर बैठने को लेकर विवाद की खुंदक आरोपी छात्र अपने दिमाग में पालता-पोसता रहा। फिर एक दिन सहपाठी को सुबह मिलने के बहाने बुलाया और अपने दादा के हथियार से गोली मारकर हत्या कर दी। घटना बेहद दुखद है और हर मां-बाप के लिये बेहद चिंता का विषय कि उनके बच्चे का सहपाठी भी इतना खूंखार हो सकता है। हमारे जिस समाज की प्यार, सामंजस्य व सहयोग के लिये मिसाल दी जाती थी, उसमें ये किशोर आखिर ऐसा भयानक कदम कैसे उठा रहे हैं? जिस उम्र में किशोरों को पढ़ना-लिखना था, उस समय में वे हिंसक गतिविधियों में क्यों लिप्त हो रहे हैं? दोषी तो आरोपी छात्र के अभिभावक भी हैं कि जिन्होंने घातक हथियार को लापरवाही से घर में छोड़ा, जिससे आरोपी ने हत्या को अंजाम दिया। बताते हैं कि आरोपी छात्र के दादा सेना से सेवानिवृत्त हैं और एक बैंक में सुरक्षा गार्ड हैं। कितनी दुर्भाग्यपूर्ण घटना है कि मृतक छात्र अपने परिवार में इकलौता था और अपने परिवार को हमेशा के लिये रोता-बिलखता छोड़ गया। एक समय अमेरिका व यूरोप में ऐसी घटनाएं सुनने में आती थी। अब ये किशोर अपराध हमारे दरवाजों पर भी दस्तक देने लगे हैं। समाज में व्याप्त नकारात्मकता व हिंसक प्रवृत्ति का किशोरों द्वारा अनुकरण करना हमारे समाज के लिये खतरे की घंटी ही है।बीते मार्च में दिल्ली के वजीराबाद इलाके में एक छात्र की ऐसी ही निर्मम हत्या हुई थी। वजीराबाद की घटना में एक नौवीं के छात्र का अपहरण करके उसके परिजनों से दस लाख की फिरौती मांगी गई थी। छात्र की हत्या के बाद जांच में पता चला कि उसके अपहरण व हत्या में तीन किशोर संलिप्त थे। आए दिन स्कूल-कालेज विवाद में हिंसक घटनाएं हमें परेशान करती हैं। यदि कम उम्र के बच्चों व किशोरों में बढ़ती हिंसक प्रतिशोध की प्रवृत्ति पर लगाम न लगी तो डर लगता है कि आने वाले समय में हमारे समाज का स्वरूप कैसे होगा। सवाल यह है कि आखिर किशोरों में आपराधिक प्रवृतियां क्यों पनप रही हैं। आखिर उन्हें मां-बाप का संघर्ष क्यों नहीं दिखायी देता कि वे कैसे उन्हें पाल-पोस व पढ़ा-लिखा रहे हैं? समाज विचार करे कि वे कौन से कारक हैं जो बच्चों को आपराधिक प्रवृत्ति का बना रहे हैं। उनके द्वारा ऐसे जघन्य अपराध को अंजाम देने के लिये जिम्मेदार प्रवृत्ति का स्रोत क्या है? ऐसे बच्चों में कानून का भय क्यों नहीं है? कभी लगता है कि हमारे जीवन का हिस्सा बने तकनीकी साधन बच्चों के विवेक पर आक्रमण कर रहे हैं। जिससे उनमें सही-गलत की सोच की प्रक्रिया बाधित हो रही है। कहा जा रहा है कि फिल्म, वेब सीरीज तथा इंटरनेट में व्याप्त आपराधिक कार्यक्रम उन्हें हिंसक बना रहे हैं। जिससे वे बेलगाम सपनों के संजाल में भी फंसते हैं।

प्रधानमंत्री मोदी की कार्यशैली में लोकमाता अहिल्याबाई की प्रेरणा

लेखक-अजय कुमार द्विवेदी

भारतवर्ष की इतिहास गाथा उन दिव्य विभूतियों से सुशोभित है, जिन्होंने अपने त्याग, तपस्या, न्यायप्रियता और लोकसेवा से न केवल समाज को दिशा दी, बल्कि काल की सीमाओं को पार करते हुए युगों तक प्रेरणा का स्रोत बनी रहीं। ऐसी ही एक विलक्षण विभूति थीं लोकमाता देवी अहिल्याबाई होल्कर, जिनका जीवन राष्ट्र के लिए समर्पित धर्म, सेवा, न्याय और जनकल्याण का जीवंत आदर्श रहा। आज जब हम 21वीं सदी के भारत में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व को देखते हैं, तो उनकी कार्यशैली में बार-बार अहिल्याबाई होल्कर की उस प्राचीन परंपरा की झलक दिखाई देती है – जहाँ सत्ता नहीं, सेवा प्राथमिक उद्देश्य होता है; जहाँ विकास का मार्ग संस्कृति से होकर गुजरता है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का सम्पूर्ण शासनदर्शन फ़सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयासफ़ के सिद्धांत पर आधारित है। उनकी सोच और योजनाओं में देश के अंतिम पंक्ति के नागरिक की चिंता दिखाई देती है – ठीक उसी तरह जैसे अहिल्याबाई ने अपने राज्य में हर वर्ग, हर जाति, हर स्त्री-पुरुष को न्याय और गरिमा का जीवन प्रदान किया। मोदी जी की जनधन योजना ने करोड़ों गरीबों को बैंकिंग व्यवस्था से जोड़ा, उज्ज्वला योजना ने रसोई में गैस चूल्हा पहुँचा कर महिलाओं को सम्मानित जीवन दिया, आयुष्मान भारत योजना ने करोड़ों को स्वास्थ्य सुरक्षा दी, तो स्वच्छ भारत मिशन ने हर गली-मोहल्ले को स्वच्छता की नई चेतना से जोड़ा। ये सभी योजनाएं केवल सरकारी प्रयास नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक पुनर्जागरण के वाहक हैं।प्रधानमंत्री मोदी की कार्यशैली में एक विशेष बात है – संस्कृति और अध्यात्म के साथ उनका गहरा जुड़ाव। जिस भक्ति और श्रद्धा से अहिल्याबाई ने भारत के तीर्थों – काशी, रामेश्वरम, सोमनाथ, गया, द्वारका आदि – का पुनर्निर्माण कर उन्हें भव्यता प्रदान की, उसी परंपरा को प्रधानमंत्री मोदी ने आधुनिक भारत में पुनर्जीवित किया है। काशी विश्वनाथ धाम कॉरिडोर, केदारनाथ धाम का पुनर्विकास, महाकाल लोक का सृजन और अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मंदिर का निर्माण – यह सब न केवल स्थापत्य की दृष्टि से अद्वितीय हैं, बल्कि भारत की आत्मा को गौरव के साथ स्थापित करने का ऐतिहासिक कार्य है।मोदी जी के नेतृत्व की खूबी यह है कि वह निर्णय लेने में दृढ़, परंतु जनता के प्रति संवेदनशील हैं। उनकी कार्यशैली में आधुनिक प्रबंधन और प्राचीन भारतीय मूल्यों का अद्भुत समन्वय दिखता है। जिस प्रकार अहिल्याबाई स्वयं जनता के बीच जाकर उनकी समस्याएं सुनती थीं, उसी तरह मोदी जी भी तकनीक और संवाद के माध्यमों से देशवासियों से निरंतर संपर्क में रहते हैं। 'मन की बात' जैसे कार्यक्रमों ने जनसुनवाई और जनसंवाद की एक नई परंपरा को जन्म दिया है। उनके शासन में योजनाएं केवल फाइलों में सीमित नहीं रहीं, बल्कि जमीनी स्तर पर सशक्त परिणामों के रूप में प्रकट हुईं।नारी सशक्तिकरण के क्षेत्र में मोदी सरकार के प्रयास विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ', 'सुकन्या समृद्धि योजना', महिलाओं के लिए स्व-रोजगार योजनाएं, मातृत्व लाभ विस्तार और सैन्य बलों में महिलाओं की भागीदारी जैसे कदम स्पष्ट करते हैं कि नरेंद्र मोदी का दृष्टिकोण नारी को केवल संरक्षित नहीं, बल्कि आत्मनिर्भर और नेतृत्वकारी बनाने का है – और यही तो थी अहिल्याबाई की सोच, जिन्होंने अपने समय में स्त्रियों को सामाजिक गरिमा और अधिकार प्रदान किए थे।

प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत एक आत्मनिर्भर और सांस्कृतिक रूप से सशक्त राष्ट्र बनने की दिशा में निरंतर अग्रसर है। 'मेक इन इंडिया', 'स्टार्टअप इंडिया', 'वोकल फॉर लोकल', 'डिजिटल इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' जैसे कार्यक्रमों ने भारत की आंतरिक शक्ति को उभारा है। उनकी विदेश नीति भी भारत की सांस्कृतिक पहचान को वैश्विक मंचों पर स्थापित करने का कार्य कर रही है। योग, अंतरराष्ट्रीय मंचों पर संस्कृत और गीता का उल्लेख, भारतीय परंपराओं का सम्मान – यह सब केवल कूटनीतिक कदम नहीं, बल्कि भारत की आत्मा की अभिव्यक्ति है। मोदी जी के निर्णयों में पारदर्शिता, जवाबदेही और सेवा की भावना स्पष्ट दिखाई देती है। भ्रष्टाचार के विरुद्ध कड़े कदम, डिजिटल ट्रैकिंग से योजनाओं की निगरानी, सरकारी खर्चों में कटौती, और जनसाधारण तक लाभ सीधा पहुँचाना – यह सब उनके शासन की कार्यकुशलता को दर्शाता है।, तो यह केवल एक आर्थिक यात्रा नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक जागरण की प्रक्रिया है। नरेंद्र मोदी का नेतृत्व उस परंपरा का पुनरावर्तन है, जिसे अहिल्याबाई होल्कर जैसी विभूतियों ने अपने त्याग और तपस्या से सजीव किया था। प्रधानमंत्री मोदी के कार्यों में न केवल आधुनिकता की दृष्टि है, बल्कि भारत की सनातन चेतना की गूंज भी है। वे केवल नेता नहीं, बल्कि एक ऐसे युगदृष्टा हैं जो भारत को उसके स्वाभाविक गौरव की ओर ले जा रहे हैं।

इसलिए जब हम आज के भारत की यात्रा को समझते हैं, तो यह आवश्यक है कि हम उसके ऐतिहासिक संदर्भों को भी स्मरण करें। प्रधानमंत्री मोदी की कार्यशैली, योजनाओं की व्यापकता और सांस्कृतिक पुनर्जागरण की भावना हमें बार-बार अहिल्याबाई होल्कर की याद दिलाती है – एक ऐसी महान नारी, जिनके लिए शासन सेवा था, न्याय धर्म था, और जनकल्याण संकल्प। उनके मार्ग पर चलकर आज का भारत आत्मनिर्भरता, सांस्कृतिक चेतना और वैश्विक नेतृत्व की ओर बढ़ रहा है।

हम ऐसी महान विभूति अहिल्याबाई होल्कर को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं, जिन्होंने हमें सिखाया कि सत्ता का सर्वोच्च स्वरूप सेवा होता है। उनके सिद्धांत और जीवन आज भी हमारे लिए प्रकाशस्तंभ हैं। अहिल्याबाई को कोटिशः नमन! और उन सभी नेतृत्वकर्ताओं को वंदन, जो भारत को उसकी सनातन आत्मा के साथ विश्वगुरु बनाने के संकल्प में जुटे हैं।

प्रदेश अध्यक्ष - सनातन मठ मंदिर रक्षा समिति, उत्तर प्रदेश
समाजसेवी एवं राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना के सजग प्रहरी

प्रेम और घृणा के बीच मानवता का सफर

अंतर्मन

श्याम सखा 'श्याम'

यदि हम सामूहिक रूप से घृणा के स्थान पर करुणा, भय के स्थान पर संवाद, और संघर्ष के स्थान पर सहयोग चुनें–तो शायद मानवता की कहानी एक नया, उज्ज्वल, विवेकपूर्ण और अधिक मानवीय मोड़ लेगी।प्रेम और घृणा–हमारे भावनात्मक और सामाजिक ब्रह्मांड की दो सबसे शक्तिशाली शक्तियां–न केवल हमारे व्यक्तिगत जीवन को आकार देती हैं, बल्कि पूरी सभ्यताओं के उदय और पतन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। एक उदाहरण प्रसिद्ध इतिहासकार–युवाल नोआ हरारी, इस्राइली विद्वान और होमो सेपियंस पुस्तक के लेखक–ने साझा किया है।

हरारी कहते हैं कि यदि आप एक इंसान और एक गोरिल्ला को किसी निर्जन द्वीप पर छोड़ दें, तो संभव है कि गोरिल्ला इंसान से अधिक समय तक जीवित रहे–यहां तक कि वह इंसान को मार भी सकता है। लेकिन यदि आप दस इंसानों और सौ गोरिल्लाओं को उसी द्वीप पर छोड़ दें, तो लगभग निश्चित है कि इंसान जीतेंगे। वजह है कि इंसान संगठित हो सकते हैं, संवाद कर सकते हैं, रणनीति बना सकते हैं, और सबसे महत्वपूर्ण कि सामूहिक निर्णय ले सकते हैं। यही सामूहिक निर्णय लेने की क्षमता मानव समाज की नींव बनी ,जो सबसे पहले परिवार के रूप में प्रकट हुई।कल्पना कीजिए उस क्षण की, जब एक पुरुष और एक स्त्री साथ रहने का निर्णय लेते हैं–बच्चे का पालन-पोषण करते हैं, भोजन, आश्रय और भावनात्मक संबंध साझा करते हैं। यही सह-अस्तित्व मानव इतिहास का पहला सहयोगी निर्णय था। इसी पहल प्रेम और सहयोग की इकाई से कबीले बने, संस्कृतियां विकसित हुईं,

धर्मों का उदय हुआ, और राष्ट्रों की नींव पड़ी। हम इस विचार को आदम और हव्वा की प्राचीन कथा में भी प्रतीक रूप में देख सकते हैं–एक ऐसी कहानी जिस चाहे आप धर्म में विश्वास करें या नहीं, एक गहरी मनोवैज्ञानिक सच्चाई को प्रकट करती है। यह प्रेम, प्रलोभन, साथ, गलती और परिणाम की कहानी है।

बीसवीं सदी के दार्शनिक जिद्दु कृष्णमूर्ति ने क्रांतिकारी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। उनका कहना था कि आदम और हव्वा का मिलन–या आधुनिक विवाह संस्था–प्रेम पर नहीं, बल्कि आवश्यकता पर आधारित है। पारस्परिक निर्भरता, सुविधा, और यहां तक कि स्वार्थ भी इसमें शामिल हैं।

कृष्णमूर्ति ने कहा, 'अधिकांश लोगों के लिए प्रेम का अर्थ है ़ आराम, सुरक्षा और जीवनभर की भावनात्मक संतुष्टि की गारंटी।' साथ ही, विवाह में भी विश्वास और आपसी संतोष की एक नाजुक उम्मीद निहित होती है। यदि हम विवाह संस्था के इतिहास को देखें, तो पता चलता है कि यह एक पवित्र बंधन के रूप में शुरू होकर धीरे-धीरे अनुबंध और फिर कानूनी युद्धभूमि बन गई। तलाक–जो कुछ आदिम समाजों में भी मौजूद था–सबसे पहले यूनानी-रोमनों ने कानून में दर्ज किया। बाद में, ईसाई और हिंदू धर्म ने इसे पाप माना, जबकि इस्लाम ने तलाक को स्वीकार किया, लेकिन अंतिम उपाय माना। दिलचस्प बात यह है कि इस्लाम ने पुरुषों के लिए तलाक की प्रक्रिया को सरल भी बनाया।समय के साथ, नवीनता, परिवर्तन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की इच्छा आजीवन प्रतिबद्धता के आदर्श से अधिक बलवती हो गई। और आज तलाक एक वैश्विक वास्तविकता बन चुका है–लगभग सामान्य। विवाह संस्था का पतन इसलिए नहीं हुआ कि मनुष्यों ने प्रेम करना बंद कर दिया, बल्कि इसलिए कि प्रेम की परिभाषा बदल गई है। अब हम प्रेम को केवल एक कर्तव्य के रूप में स्वीकार नहीं करते। हम चाहते हैं कि प्रेम मुक्त करे, न कि बंधन में डाले; समृद्ध करे, न कि दास बनाए।व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखें तो परिवार, जो प्रेम और विश्वास से जन्मा था, वही बीज बना जिससे कबीले, समाज, धर्म और राष्ट्र विकसित हुए। विश्वास ने कानूनों को जन्म दिया, और मानव अधिकारों की अवधारणा का आधार रखा। लेकिन याद रखें–प्रकृति और जीवन द्वैत के सिद्धांत पर चलते हैं। रात के बाद दिन आता है, प्रकाश अंधकार में बदलता है, और जहां प्रेम होता है, वहां उसकी छाया भी होती है।

(बदला सामाजिक परिदृश्य....)

महज कहावत बनकर रह गई है '2 जून की रोटी'

रोटी की जगह फास्ट फूड खाने का बढ़ा प्रचलन

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर। दो जून की रोटी सिर्फ मेहनतकश जिंदगी की कहावत बनकर रह गई है। अब यह सोशल मीडिया का ट्रेंड बन चुकी है। हर साल की तरह इस बार भी 2 जून को इंस्टाग्राम, फेसबुक और ट्विटर पर दो जून की रोटी टॉप ट्रेंड्स में बना हुआ है। एक समय था जब दो जून की रोटी केवल एक कहावत नहीं बल्कि जीवन का असली दस्तावेज हुआ करती थी। सूरज उगता था और आदमी काम धाम की ओर निकल पड़ता था, मन में एक ही लक्ष्य, शाम को थककर लौटे तो घरवालों के हाथ की रोटी मिल जाए। उस रोटी में स्वाद कम, श्रम अधिक होता था। नमक प्याज के साथ भी वह रोटी इतनी स्वादिष्ट लगती थी कि जैसे पूरी दुनिया की तृप्ति उसी थाली में परोस दी गई हो फिर वक्त बदला, रोटी की जगह ले ली पिज्जा-बर्गर ने। अब रोटी बनाना नहीं पड़ता, ऑर्डर करना पड़ता है और इस नए जमाने में रोटी की हालत ऐसी हो गई है जैसे किसी बूढ़े दादा की। सब जानते हैं कि वो जरूरी हैं लेकिन साथ कोई नहीं बैठता। अब दो जून की रोटी का मतलब है पेट भरने की मजबूरी, न कि आत्मा को तृप्त करने का अवसर।

आज के बच्चे रोटी नहीं, रैप खाते हैं। रोटी अब सादगी की निशानी नहीं रही, वो ट्रेंड से बाहर हो चुकी है। उसे खाने के लिए या तो डॉक्टर की सलाह होनी चाहिए या गरीबी की

मजबूरी। बाजार ने हमें इतने नकली स्वाद दे दिए हैं कि अब असली भूख का अहसास ही खो गया है। और जब कोई कहता है फ्दो जून की रोटी मिल जाए बसफ्, तो लोग हंस पड़ते हैं जैसे वह कोई पुरानी फिल्म का संवाद बोल रहा हो। जब बच्चे पूछें रोटी क्या होती है? तो जानिए कि असली स्वाद, सच्ची तृप्ति और मेहनत का आदर हम यूं ही बाजार की थाली में गंवा चुके हैं क्योंकि दो जून की रोटी अब तवे पर नहीं, सोशल मीडिया की रीलों में सिक रही है फिल्टर के साथ और आत्मा के बिना।

दो जून की रोटी का क्या है मतलब-

मुहावरे का अर्थ समझें तो दो जून की रोटी का मतलब है दो वक्त की रोटी जुटाना। जून शब्द अवधी भाषा से लिया गया है। जून का मतलब होता है समय। एक तबका है जिसे अगर सुबह की रोटी मिल जाती है तो जरूरी नहीं कि शाम की भी मिल ही जाएगी इन्हीं लोगों द्वारा दो जून की रोटी मुहावरे का इस्तेमाल किया जाता है। यह मुहावरा गरीब तबके के दुःख और उसकी वेदना को दर्शाता है। इसी के चलते दो जून की रोटी मुहावरे का प्रयोग प्रेमचंद और जयशंकर प्रसाद जैसे साहित्यकार अपनी कहानियों में कर चुके हैं। वहीं फिल्मी परदे पर भी इस मुहावरे का खूब इस्तेमाल किया जाता रहा है।

हास्य-व्यंग्य दिवस

2 जून लोगों के लिए एक हास्य और व्यंग्य दिवस के रूप में बन चुका है। 2 जून की रोटी दरअसल एक मुहावरे के रूप में मशहूर है जिसका मतलब दो वक्त की रोटी मिलने से है। सोशल मीडिया के बदलते ट्रेंड के बीच अब लोगों द्वारा 2 जून आते ही तरह-तरह के फनी मैसेज 2 तारीख को 2 जून से जोड़ते हुए शेयर किए जाने लगते हैं। इस बीच लोगों को हंसने के बहाने खोजने के लिए इस तरह के मैसेज को शेयर करने की एक वजह भी मिल जाती है।

निठल्ले कनपुरिया की चिट्ठी...

(वरिष्ठ पत्रकार महेश शर्मा की फेसबुक वाल से)

आदरणीय मोदी जी,

आपने भाषण में कनपुरिया जुमलों का इस्तेमाल करके हम कनपुरियों से डायरेक्ट कनेक्ट तो हो गए, पर इन जुमलों और हम कनपुरियों को बिसार न देना। बस यही इल्तिजा है। राबिता बनाये रखियेगा। जवाहरलाल नेहरू (नाराज न होइएगा जरूरत पड़ी तो नाम लिखना पड़ा), इंदिरा गांधी, राजीव गांधी, पीवी नरसिम्हाराव, एचडी देवगौड़ा, अटल बिहारी वाजपेयी, डॉ. मनमोहन सिंह तक का कानपुर से बहुत गहरा राबिता (उर्दू शब्द राब्ता जिसका अर्थ रिश्ता या संबन्ध है) रहा है। कानपुर में कुछ लोग तो नेहरू को ए जवाहर बुलाते रहे हैं। कानपुर में ही महात्मा गांधी ने कांग्रेस अध्यक्ष पदभार सरोजनी नायडू को 100 वर्ष पहले 1925 में सौंपा था। अटल जी का झाड़े रहौ कलक्टरगंज का जुमला तो भला कौन नहीं जानता। राजीव गांधी ने कनपुर की मलिन बस्तियां पांव-पांव नाप ली थी। यह बात दीगर कि तब वह कांग्रेस के महासचिव थे। तत्कालीन सीएम श्रीपति मिश्र पीछे-पीछे चलते हुए हांफ रहे थे। वीपी सिंह की बेलौस बातचीत के अंदाज़ का लुत्फ भी हम कनपुरियों ने उठाया है। कनपुरिया जुमले इनके शब्दकोश में हमेशा हिफाजत पाते रहे हैं। आप ने जनसभा में जब बोला कि दुश्मन चाहे जहां रहे हउंक देंगे। यह बोलने से पहले आपने यह भी कहा कि कनपुरिया शब्दों में कहें तो.....। कसम से हम कनपुरियों का दिल गार्डन गार्डन (बाग-बाग) हो गया है। क्या है कि हम लोग थोड़ा इमोशनल टाइप के प्राणी हैं। जो भी प्यार से मिला हम उसी के हो लिए। दरअसल हमें हमारी संस्कृति बहुत प्यारी है। जो भी हमसे जुड़ता है हम रिश्ते निभाने की किसी सीमा तक चले

जाते हैं। लगता है कि कानपुर ने आपसे रिश्ता कायम कर लिया है। रिश्ता कायम करने के अपने-अपने अंदाज होते हैं। अचानक ग़ालिब याद आ गए। हैं और भी दुनिया में सुखनवर बहुत अच्छे, कहते हैं कि ग़ालिब का है अंदाज़-ए-बयाँ और एक प्रसिद्ध शेर है जो मिर्ज़ा ग़ालिब के अलग और विशिष्ट शैली की ओर इशारा करता है। यह दर्शाता है कि दुनिया में बहुत से अच्छे शायर हैं, लेकिन ग़ालिब का अंदाज़-ए-बयाँ (शैली) अद्वितीय है। कुछ ऐसी शैली मोदी जी आपकी भी है। जहां जाते हैं वहां की नब्ज पहचान कर पकड़ लेते हैं और लोग आपके मुरीद होने लगते हैं। लोग बहुत भोले हैं। कामकाज का ऑडिट करना भूल जाते हैं। इसे हम पत्रकार सोशल ऑडिट कहते हैं। कानपुर आपका आना-जाना लगा रहेगा। दर्जनों छोटे-बड़े प्रोजेक्ट हैं जिन्हें आप के कर कमलों का सदैव इंतज़ार रहेगा। खांटी कनपुरिया होने के नाते हमें लगता है कि आप के शब्दकोश में कनपुरिया जुमलों का इजाफा कर दें। हालांकि हम तो ठहरे बकलोल पार्टी फिर भी एक छोटी सी कोशिश करते हैं। क्या करें, कानपुर की चाल ही ऐसी है। नौ दिन चले अढ़ाई कोस यह चाल यहां के विकास की है। यपी रोज आओ तो भी वह अपने स्पीड से ही चलेगा। गरियार बैल हो गया है ससुरा। अब नमामि गंगे को देख लो। कनपुरियों ने मान लिया है कि मन चंगा तो कठौती में गंगा। नहीं हनायेंगे (नहाएंगे) गंगा। मोदी जी साफ करा देंगे तब नहाएंगे। तो, फीडबैक तो आपके कनपुरियापन से बेइंतिहा मुहब्बत का मिल रहा है। लोग खुश लगते। अभी से ही लोगों ने उपाधिमूलक शब्द गुरू से नवाजना शुरू कर दिया है। छोटा सा किस्सा याद आ गया। बेस्ट मेम्बर पार्लियामेंट नामक सम्मान की परंपरा पीएम पीवी नरसिम्हाराव ने शुरू की थी तो पहला सम्मान अटलजी को प्राप्त हुआ। वह डिजर्व करते थे। पीएम ने सम्बोधन में कह दिया, (अटलजी की तरफ इशारा करते हुए) आप तो हमारे गुरु हैं। अटलजी भला कहां चूकने वाले, बोले मैं तो गुरू हूँ आप तो गुरू घण्टाल हैं। सन्दर्भ था अल्पमत की सरकार पांच साल तक चलाने का। अटलजी में कनपुरियापन कूट-कूटकर भरा था। लगता है देर से ही सही पर कल्चरल ट्रांसफॉर्मेशन का दौर जन्म ले चुका है। आपके मुखारबिंदु से हउंकना शब्द संकेत है। यकीन मानिए गुजरात के नमक की कसम, आप में कनपुरियापन कहीं न कहीं है। यह कानपुर का भाग्य चमकने जैसा है। अब विकास तेजी से दौड़ेगा कानपुर में। न दौड़ा तो आप हउंक देना। हउंकने की महिमा अपरंपार है। कभी कभी तो सब जगह से हउंके जाने वाला निरीह आखिर में घरैतिन को हउंक देता है। दुश्मन को ऑपरेशन सिंदूर की तरह हऊँका गया तो वह भारत की तरफ देखना ही बन्द कर देगा। कानपुर के पत्रकारों, साहित्यकारों ने तमाम देशज शब्द दिए हैं जिनमें से हउंकना भी एक है। कानपुर की शब्दावली किसी एटम बम से कम थोड़े ही है। कुछ शब्द इस प्रकार हैं-जैसे- लुर, लोलम, लोलर, लोलपिन, लौझड़, लौडिहाय, लपूड़ी, लम्पट, लूमड़, धांसू, उजबक, तिरकोतीन, ढक्कन, पिलू, बकलोल, खैचूँ, पिलिकाट, पिलियन्तन, गबड़चौथ, पैदल, हैलट, झैंयमझां, फलालैन, चौघड़, चिरकुट, चुंघट, चोंच, रागिया, खड़ूस, चघड़, खबीस, झामा, झाम, खबेड़ि, सटहा, चिताड़गोड़ीगम्म, इगड़े रे हूं....इत्यादि इत्यादि। जरूरत पड़ने पर ये प्रयोग किये जा सकते हैं।

एक दिन लेट बारात पहुंचने से लड़की ने किया इनकार

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर/घाटमपुर। एक दिन बाद बरात लेकर पहुंचने पर दूल्हे की करतूतों से नाराज दुल्हन ने शादी से इनकार कर दिया। दोनों पक्षों के बीच लेनदेन को लेकर कई घंटे पंचायत चली।

घाटमपुर के रेउना थाना क्षेत्र के शाखा जनवारा में रविवार की शाम के बजाए बरात सोमवार सुबह चार बजे पहुंचने से दुल्हन व उसके परिजन नाराज हो गए। इस पर उन्होंने शादी से इनकार कर दिया। लेनदेन को लेकर कई घंटे पंचायत चलने पर नतीजा नहीं निकला तो पुलिस ने दोनों पक्षों को थाने बुलाया।

कानपुर देहात के बारा गांव से शिवपाल के बेटे आकाश की बरात शाखा जनवारा में रहने वाले प्रेम बाबू के यहां रात के बजाय दूसरे दिन सुबह पहुंची। इस दौरान देरी करने के जिम्मेदार दूल्हे की करतूतों की जानकारी होने पर दुल्हन रीना ने शादी से इनकार कर दिया। दुल्हन के शादी से इनकार में घर वालों के शामिल होने पर जनातियों ने बारातियों को बंधक बना लिया। बात बिगड़ने पर कई बराती मौका लगाकर खिसक लिए। कई घण्टों तक चली पंचायत के बाद भी बात न बनने तथा शादी के लिए किए गए लेन देन को वापस लौटाने को लेकर पंचायत चलती रही। जिसकी जानकारी मिलने पर रेउना चौकी प्रभारी प्रेम कुमार मौके पर पहुंचे। पुलिस ने दोनों पक्षों के बीच बात बनते न देख सुबह थाने बुलाया जहां दोनों पक्षों के बीच अभी पंचायत चल रही है।

नमी ने निकाली नौतपा की गर्मी, पारा 40 तक नहीं पहुंचा, 20 जून तक मानसून आने की उम्मीद

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर। तीन साल के बाद इस बार नौतपा नहीं तपा। नौतपा के आठ दिन पारा 40 डिग्री सेल्सियस तक नहीं पहुंच पाया। सामान्य औसत से अधिकतम तापमान इस दौरान कम रहा है। अधिकतम तापमान कम रहने और माहौल में नमी रहने की वजह से लू तो नहीं चली लेकिन उमस भरी गर्मी ने शहरियों को बेहाल किया। मौसम विज्ञानियों का कहना है कि जिस साल नौतपा नहीं तपता उस बार मानसून तो जल्दी आ जाता है लेकिन बारिश ढंग की नहीं होती। बारिश न होने से धान की फसल पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इस बार नौतपा के दौरान 5.6 मिमी बारिश भी हुई है।सीएसए के मौसम विभाग के तकनीकी अधिकारी अजय मिश्रा ने बताया कि वर्ष 2022 से वर्ष 2024 तक नौतपा में तपन रही है। इसके पहले वर्ष 2021 में नौतपा नहीं तप पाए। 31 मई वर्ष 2021 को 54 मिमी बारिश भी हुई थी। इसके अलावा बीच में बूंदाबांदी होती रही है।

उन्होंने बताया कि नौतपा न तप पाने पर मानसून पहले जरूर आ जाता है लेकिन बारिश उस स्तर की नहीं हो पाती। नौतपा के आठ दिनों में तापमान 40 डिग्री नहीं पहुंच पाया। इस बीच सबसे अधिक तापमान 39.9 डिग्री 30 मई को रहा है। यह सामान्य औसत से 0.9 डिग्री कम था। सीएसए के मौसम विभाग ने चार और पांच जून को तेज हवा और गरज-चमक के साथ स्थानीय स्तर पर बारिश का पूर्वानुमान जारी किया है। बता दें कि नौतपा में 40 से 43 डिग्री तक तापमान अमूमन जाता है।मानसून केरल तक पहुंच गया है लेकिन बंगाल की खाड़ी में निम्न दबाव का क्षेत्र बन जाने के कारण हवाओं का रुख उस तरफ हो गया है। इससे मानसून धीमा पड़ा है। पहले यह अनुमान लगाया जा रहा था कि मानसून 15 जून तक कानपुर परिक्षेत्र में दस्तक दे देगा ।

चौकाघाट हाइवे: जीजा साले सरहज सहित चालक की हादसे में दर्दनाक मौत

» अर्टिगा कार व ट्रक में भीषण टक्कर से मचा हड़कंप

» कानपुर से सगाई कार्यक्रम में शामिल होकर वापस गोण्डा जा रहे थे

स्वराज इंडिया संवाददाता

रामनगर(बाराबंकी)। थाना क्षेत्र के चौंका घाट हाईवे स्थित गुप्ता ढाबा के पास अर्टिगा कार व ट्रक की हुई आमने सामने भीषण टक्कर में कानपुर से सगाई कार्यक्रम में शामिल होकर वापस गोण्डा लौ रहे जीजा साले सरहज व कार चालक की दर्दनाक मौत हो गई हादसे में दो मासूम समेत ननद को गंभीर हालत में इलाज के लिए जिला अस्पताल से ट्रामा सेंटर लखनऊ भेजा गया है।

मृतकों की फाइल फोटो

सोमवार की सुबह करीब 6 बजे लखनऊ गोंडा राष्ट्रीय राजमार्ग के चौंका घाट स्थित गुप्ता ढाबा के पास जरवल की ओर से आ रहे तेज रफ्तार ट्रक तथा गोण्डा जा रही आर्टिका कार में आमने-सामने की जोरदार टक्कर हो गई। जिससे कार चालक समेत उस पर सवार सात लोग गंभीर रूप से घायल हो गए । सूचना पर दलबल के साथ पहुंचे थाना प्रभारी निरीक्षक अनिल कुमार पांडेय ने एम्बुलेंस के द्वारा सभी घायलों को उपचार के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र रामनगर भिजवाया जहां पर चिकित्सकों ने 25 वर्षीय कार चालक अयान कुरेशी पुत्र फखरुद्दीन निवासी मोहल्ला इमामबाड़ा नगर कोतवाली गोंडा , (40) वर्षीय रमा शंकर मौर्या पुत्र दुखहरन निवासी खिराभा थाना कोतवाली नगर जनपद गोंडा व उनके 35 वर्षीय साले राजवीर उर्फ सुधीर और 32 वर्षीय सरहज शान्ती निवासी मालवीय नगर चौक थाना कोतवाली नगर जनपद गोंडा को मृत घोषित कर दिया।

मृतक रमाशंकर की 35 वर्षीय पत्नी पूजा व 7 वर्षीय आनवी व 9 वर्षीय अक्ष की हालत गंभीर होने पर उपचार के लिए जिला चिकित्सालय भेजा गया है जहां से हालत चिंताजनक होने के चलते ट्रामा सेंटर लखनऊ भेजा गया है। घटना की सूचना पाकर

पुलिस क्षेत्राधिकारी गरिमा पंत व कोतवाली प्रभारी बदोसराय संतोष कुमार भी मौके पर पहुंचकर राहत बचाव कार्य में लग रहे। थाना प्रभारी निरीक्षक रामनगर अनिल कुमार पांडेय ने बताया कि सड़क हादसे में चार लोगों की मृत्यु हुई है जिनको पोस्टमार्टम के लिए जिला चिकित्सालय भेजा गया। आवश्यक कार्रवाई की जा रही है। हादसे के बाद हाइवे पर वाहनों का लंबा जाम लग गया। पुलिस ने क्षतिग्रस्त वाहनों को हाइवे से हटवाकर यातायात को बहाल करवाया। ट्रक चालक मौके से फरार हो गया। सूचना पर पहुंचे परिजनों में चीख पुकार मच गई।

ग्रामीणों के साथ जिला पंचायत सदस्य ने किया अवैध खनन का विरोध

» रात्रि 3 बजे से रात्रि 9 बजे तक जोरों से चलता है खनन

स्वराज इंडिया संवाददाता

निंदूरा बाराबंकी। विकासखंड निंदूरा में एक सप्ताह से चल रहे अवैध खनन जो परमिशन की आड़ में रात्रि 3 बजे से रात्रि 9 बजे तक जोरों से चल रहा है। सूचना मिलते ही जिला पंचायत सदस्य मो0 हारुन गाजी ने ग्रामीणों के साथ मिलकर ग्राम अगासड़ पहुँचे और विरोध जताया। आरोप है कि दर्जनों डंफर द्वारा मिट्टी खनन से राहगीरों को सड़क पर निकलना दुश्वार है। ग्रामीणों का कहना है की खनन परमिशन दिन के लिए है किन्तु इस समय दिन रात लगातार खनन किया जा रहा है जिससे ग्रामीण काफी परेशान हैं। बता दें कि बाराबंकी के कुर्सी थाना अंतर्गत इस समय ग्राम बैनाटीकरहार से मिट्टी औधौगिक क्षेत्र उमरा एक फैक्ट्री में डाली जा रही है परमिशन की आड़ में दिन रात अवैध खनन किया जा रहा है जिससे स्थानीय लोग काफी परेशान हैं।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक सपना देवी द्वारा हर्षिता प्रिंटर्स 127/875, साकेत नगर, कानपुर नगर- 208012 (उप्र) से मुद्रित व 119/13, दर्शनपुरवा, कानपुर नगर- 208012 (उप्र) से प्रकाशित। **संपादक:** अनूप कुमार **RNI No.:** UPHIN/2023/86769 | **Email:** swarajindia2023@gmail.com | **Mob:** 7800009853, | **Website:** www.swarajindianews.com | (समस्त वाद-विवाद कानपुर न्यायालय के अधीन होंगे)

प्रेमिका के सामने प्रेमी ने लगाई फांसी, अधूरी रह गयीं कसमें

» पारिवारिक विरोध ने तोड़ा हौसला, युवक ने आम के पेड़ से लगाई फांसी

» घटनास्थल से सिंदूर और कपड़े मिले, प्रेमिका रह गई बेसुध

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर देहात। गजनेर थाना क्षेत्र के त्रिवेदिनपुर गांव में शनिवार रात दिल दहला देने वाली घटना हुई, जहां 23 वर्षीय बलबीर सिंह केवट ने आम के पेड़ से फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। बलबीर, घाटमपुर के अजगरपुर गांव का रहने वाला था और उसकी प्रेमिका हमीरपुर जिले की निवासी थी। दोनों शादी करना चाहते थे, लेकिन परिवार वालों के सख्त विरोध के चलते मानसिक तनाव में थे। शनिवार की रात दोनों मिलने के लिए त्रिवेदिनपुर गांव के आम के बाग में पहुंचे। यहां घंटों बैठकर बातचीत हुई। समाज और परिवार की दीवारें तोड़ पाने में असफल रहे प्रेमी युगल ने साथ मरने की कसम खाई, लेकिन आखिरी समय में लड़की हिम्मत नहीं जुटा सकी।

शादी की योजना थी, पर हालात के आगे हार गया प्रेमी

मौके से बरामद सिंदूर की डिब्बी, कपड़े और अन्य निजी सामान से यह साफ है कि दोनों ने शादी करने की योजना बनाई थी। बलबीर की प्रेमिका ने घटना की जानकारी उसके फुफेरे भाई सर्वेश को दी, जिसके बाद गजनेर थाना प्रभारी प्रवीन कुमार यादव फोरेंसिक टीम के साथ मौके पर पहुंचे। शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया गया है। पुलिस ने बताया कि लड़की के परिजनों को सूचना देने के बाद भी वे मौके पर नहीं पहुंचे। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

भट्टे में मिट्टी लाते ट्रैक्टर ने दो मासूमों को रौंदा

» गिरधरपुर में हादसे से मचा कोहराम, दोनों बच्चों की मौके पर मौत

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर देहात। सट्टी थाना क्षेत्र के गिरधरपुर गांव स्थित भारत ब्रिक फील्ड में बड़ा हादसा हो गया। मिट्टी खनन कर ला रहे तेज रफ्तार ट्रैक्टर ने खेलते हुए दो मासूम बच्चों को रौंद डाला, जिससे उनकी मौके पर ही मौत हो गई।

जानकारी के अनुसार, जालौन जिले के कदौरा थाना क्षेत्र के बागी निवासी महेश्वर दिन और जलालपुर निवासी मूलचंद अपने परिवार के साथ गिरधरपुर स्थित ईंट भट्ठे पर मजदूरी करते हैं।

महेश्वर का बेटा राजदीप (डेढ़ वर्ष) और मूलचंद का बेटा कृष्णा (1 वर्ष) वहीं पास में खेल रहे थे।

इसी दौरान तेज गति और लापरवाही से आ रहे ट्रैक्टर चालक ने दोनों बच्चों को कुचल दिया। बच्चों की मां मंजू और पूनम जब तक दौड़कर पहुंचीं, तब तक हादसा हो चुका था। परिजन तुरंत बच्चों को लेकर पुखरायां के सरकारी अस्पताल पहुंचे, जहां डॉक्टरों ने दोनों को मृत घोषित कर दिया।

घटना के बाद पूरे क्षेत्र में शोक और आक्रोश का माहौल है। सट्टी थाना क्षेत्र के उपनिरीक्षक नियाज हैदर ने मौके पर पहुंचकर शवों का पंचनामा भरवाया और पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पुलिस मामले की जांच में जुट गई है।

शिक्षकीय नवाचारों का मंच: शिक्षकों का राष्ट्रीय कार्यशाला में सम्मान

स्वराज इंडिया ब्यूरो

कानपुर देहात। राष्ट्रीय शैक्षिक नवाचार कार्यशाला का आयोजन केशव धाम, वृन्दावन में किया गया, जिसमें देशभर के शिक्षकों ने अपने नवाचारों का प्रभावी प्रस्तुतीकरण किया। कार्यक्रम की शुरुआत मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन से हुई। इसके पश्चात सरस्वती वंदना, स्वागत गीत, शिक्षा गीत, देशभक्ति गीत एवं राधा-कृष्ण पर आधारित सांस्कृतिक प्रस्तुतियां हुईं।

मथुरा की जिलाध्यक्ष अंजू गौतम और उनकी टीम ने सभी अतिथियों व प्रतिभागियों का तिलक लगाकर पारंपरिक स्वागत किया। विभिन्न राज्यों से आए शिक्षकों ने अपने-अपने शैक्षिक नवाचारों का पीपीटी के माध्यम से प्रभावशाली प्रदर्शन किया।कार्यशाला को संबोधित करते हुए ऑल इंडिया फेडरेशन ऑफ टीचर्स ऑर्गनाइजेशन के राष्ट्रीय महासचिव सी. एल. रोज ने एसोसिएशन की इस अवसर पर प्रतिभागी शिक्षकों को प्रशस्ति पत्र व प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में प्रदेश अध्यक्ष मनोज कुमार सिंह ने शैक्षिक नवाचार एसोसिएशन की गतिविधियों की जानकारी देते हुए सभी का आभार व्यक्त किया।जनपद कानपुर देहात की टीम का नेतृत्व स्टेट अवॉर्डी शिक्षिका पारुल निरंजन ने किया। जिले से सम्मानित होने वाले नवाचारी शिक्षकों में विनय त्रिपाठी, शिवनाथ, डॉ. त्रिलोक चंद, शैलेश पाल सिंह, गुंजन पोरवाल, मनीषा पाराशर समेत कई अन्य पदाधिकारी शामिल रहे।

मलासा में अपात्रों को आवास योजना का लाभ, सिस्टम पर सवाल

स्वराज इंडिया ब्यूरो

» प्रधान, सचिव और पटल सहायक की मिलीभगत से अपात्रों को मिली पहली किस्त

» स्वराज इंडिया करेगा एक-एक ग्राम पंचायत का खुलासा

कानपुर देहात। मलासा विकासखंड में पीएम और सीएम आवास योजना में बड़े पैमाने पर गड़बड़ियां सामने आ रही हैं। ग्राम पंचायतों में सचिव, प्रधान, पटल सहायक और रोजगार सेवकों की मिलीभगत से कई अपात्र लोगों को आवास योजना का लाभ दे दिया गया।

ग्राम पंचायत असेवा में ऐसे ही दो मामलों का वीडियो सबूत स्वराज इंडिया न्यूज के कैमरे में कैद हो चुका है।

संबंधित अपात्रों को न केवल पात्र घोषित किया गया बल्कि उनके बैंक खातों में आवास योजना की पहली किस्त की धनराशि भी भेज दी गई।

जिम्मेदारों पर गिर सकती है गाज, जल्द होगा बड़ा खुलासा

ग्राम सचिवों और पटल सहायक की संलिप्तता उजागर होने के बाद यह मामला ब्लॉक स्तर तक चर्चा का विषय बना हुआ है।

सवाल उठ रहे हैं कि जब स्थल निरीक्षण ब्लॉक और जिला स्तरीय कमेटी द्वारा किया गया, तो अपात्रों को लाभ कैसे मिल गया? यह एक गहरी जांच का विषय है।

ग्रामीणों ने अब जिला प्रशासन से इसकी शिकायत करने की तैयारी शुरू कर दी है। स्वराज इंडिया अखबार जल्द ही ग्राम पंचायत स्तर पर इस पूरे भ्रष्टाचार का खुलासा करेगा, जिसमें और भी कई नाम सामने आने की संभावना है।

चित्रकूट में पहला स्काईवॉक ब्रिज खुला...

ग्लास फ्लोर से बने ब्रिज में, नीचे का पूरा दृश्य पारदर्शी फर्श से साफ-साफ दिखाई देगा

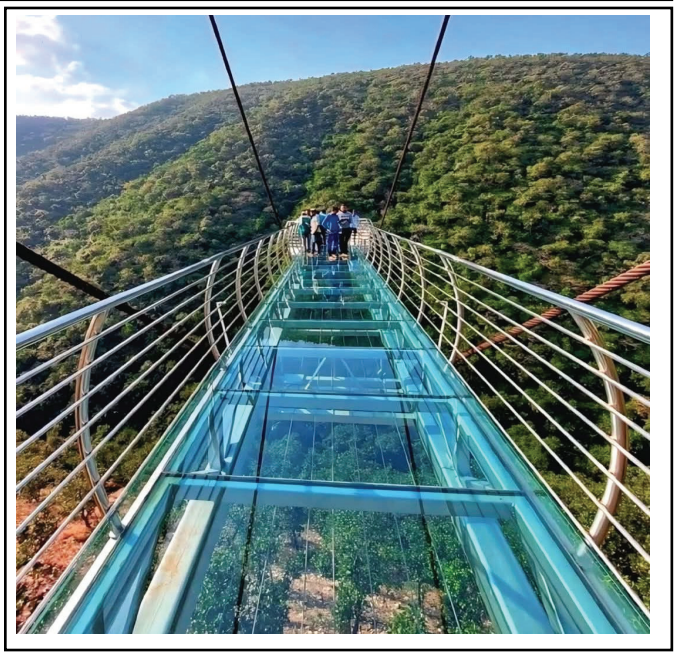

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के चित्रकूट में पहला स्काईवॉक ब्रिज खुला है, जो पूरी तरह से ग्लास फ्लोर से बना है। इस ब्रिज में, नीचे का पूरा दृश्य पारदर्शी फर्श से साफ-साफ दिखाई देगा। स्थानीय न्यूज़ रिपोर्ट्स के अनुसार, यह ब्रिज भगवान राम के धनुष और बाण की तरह दिखता है और 3.70 करोड़ रुपये की लागत से बनाया गया है। इस ब्रिज का निर्माण धार्मिक पर्यटन को आधुनिक स्वरूप देने और युवाओं को आकर्षित करने के लिए किया गया है। डीएम शिव शरणपा जीएन ने बताया कि यह शानदार प्रोजेक्ट चित्रकूट के विकास में चार चांद लगाएगा।

जूते उतारा तो दिल कृतज्ञता और गर्व से भर गया, विदाई के बाद पूर्व डीजीपी ने लिखी ये भावुक पोस्ट

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

लखनऊ। **यूपी में डीजीपी बदल चुके हैं। 31 की रात राजीव कृष्णा ने नए डीजीपी के रूप में पदभार ग्रहण किया। आज पूर्व डीजीपी प्रशांत कुमार ने जाते-जाते भावुक पोस्ट लिखी।**

पूर्व डीजीपी प्रशांत कुमार ने रविवार सुबह एक्स पर अपने साथ काम कर चुके सहयोगियों, दोस्तों और पुलिस के सभी योद्धाओं को संबोधित भावुक पोस्ट लिखी। इसमें उन्होंने लिखा कि इस पद को बिना किसी पछतावे और गर्व के साथ छोड़ रहा हूं। मेरी प्रार्थनाएं, सम्मान और समर्थन हमेशा आप सबके साथ रहेगा।

31 मई को सेवानिवृत्ति के बाद जब मैं अपने घर पहुंचा तो मेरा दिल कृतज्ञता, गर्व और अपनेपन की भावना से भर गया। यह सिर्फ विदाई नहीं है, बल्कि रुकने, चिंतन करने और सेवा की इस असाधारण यात्रा में मेरे साथ चलने के लिए आप सभी को धन्यवाद देने का क्षण है। वे सिपाही जो ट्रैफिक व्यवस्था संभालने के लिए तेज बारिश में खड़ा रहता है, जो अधिकारी रात भर जागकर केस को सुलझाता है, वह इस पुलिस बल की सच्ची आत्मा है। हम सबने साथ में त्रासदी, विजय और परिवर्तन का सामना किया है।

पुलिसिंग को आधुनिक बनाया, साइबर अपराध और अन्य विपरीत परिस्थितियों का सामना किया। इससे बढ़कर सबका विश्वास जीता। खाकी में नागरिकों का विश्वास बढ़ा। अंत में लिखा कि यूनीफॉर्म अस्थायी है, ड्यूटी हमेशा है।

डीजीपी के पद से सेवानिवृत्त हुए प्रशांत कुमार का 14 माह का कार्यकाल माफिया व अपराधियों को धूल चटाने वाला रहा। उन्होंने महाकुंभ, राम मंदिर का प्राण प्रतिष्ठा समारोह समेत कई बड़े आयोजनों में पुलिस के आतिथ्य सत्कार की नई मिसाल पेश कर धाक भी जमाई। भाजपा सरकार के पहले कार्यकाल में मेरठ जोन का एडीजी रहने के

दौरान उन्होंने पश्चिमी यूपी के तमाम कुख्यात अपराधियों का सफाया कराया, जिसके बाद सीएम योगी आदित्यनाथ ने उन्हें एडीजी कानून व्यवस्था बना दिया।

उन्होंने मुख्तार अंसारी और अतीक अहमद जैसे माफिया और उनके गैंग के सदस्यों की कमर तोड़ी, तो सीएम ने उनको 31 जनवरी 2024 को डीजीपी बना दिया। शनिवार को सेवानिवृत्त होने पर उन्होंने कई पूर्व डीजीपी की परंपरा का पालन किया और रैतिक परेड जैसी औपचारिकताओं से दूर रहे। सीएम के भरोसेमंद अफसर होने की वजह से उन्हें कोई अहम जिम्मेदारी सौंपे जाने की चर्चा है।

फन लैंड में खुलेआम जुआ, पुलिस का फन खत्म !

» एसएसपी की ईमानदारी को बदनाम करने की घटिया साजिश!

स्वराज इंडिया टीम

अयोध्या। अयोध्या के फतेहगंज इलाके में चल रही फन लैंड प्रदर्शनी असल में बन चुकी है जुए का अड्डा, जहां पुलिस की मिलीभगत से सट्टे का खेल खुलेआम खेला जा रहा है। सवाल ये है जब एसएसपी पूरी ईमानदारी से शहर को सुरक्षित रखने की कोशिश में दिन-रात एक किए हैं, तो फतेहगंज चौकी पुलिस उनकी छवि पर क्यों लगा रही है दाग?

जुए के नाम पर बालश्रम और पुलिस तमाशबीन!

रिंग डालो – इनाम पाओ जैसे खेलों में अब मासूम बच्चों को लगाया जा रहा है। बालश्रम कानून की धज्जियां उड़ रही हैं, लेकिन फतेहगंज पुलिस मानो अपनी आँखों पर पट्टी बांध कर बैठी है। सिर्फ बैठी नहीं, बल्कि अवैध वसूली में व्यस्त है।

पुलिस बूथ – बूथ है या भूत!

प्रदर्शनी के बाहर खड़ा पुलिस बूथ सिर्फ दिखावे के लिए बना है। अंदर कोई ड्यूटी पर नहीं, कोई निगरानी नहीं। पूरी प्रदर्शनी में पुलिस का एक भी सिपाही नजर नहीं आता – लेकिन पीछे से सेटिंग और कलेक्शन का खेल जारी है।

एसएसपी की छवि इन दिनों अयोध्या में ईमानदारी, पारदर्शिता और सख्ती का प्रतीक बन चुकी है। लेकिन फतेहगंज चौकी के कुछ रिश्वतखोर पुलिसकर्मी अब अपनी काली करतूतें छिपाने के लिए एसएसपी को ही बदनाम करने की चालें चल रहे हैं।

सवाल दर सवाल जवाब देने से कतरा रही चौकी पुलिस!
-फतेहगंज में कौन दे रहा जुए के खेल को संरक्षण?
-बालश्रम पर कौन रखेगा नजर?
-एसएसपी के आदेशों को क्यों किया जा रहा है अनदेखा?
एसएसपी बनाम भ्रष्ट चौकी तंत्र किसकी होगी जीत?
जनता का भरोसा एसएसपी पर कायम है लेकिन यदि ऐसी निकम्मी और भ्रष्ट चौकियों पर नकेल नहीं कसी गई, तो यह भरोसा धीरे-धीरे खत्म हो जाएगा।

स्वराज इंडिया स्पेशल स्टोरी

स्वराज इंडिया की मांग फतेहगंज चौकी को तत्काल जांच के दायरे में लाया जाए, और प्रदर्शनी में चल रहे इस जुएबाजी के खेल को तुरंत रोका जाए। एसएसपी की ईमानदार कोशिशें तभी रंग लाएंगी, जब अंदर के गद्दारों पर गिरेगी गाज। नहीं तो फतेहगंज जैसी चौकियाँ अयोध्या की छवि को मिट्टी में मिला देंगी।

जेईई एडवांस 2025 में अदित्य रावत ने बढ़ाया अयोध्या का मान

स्वराज इंडिया संवाददाता

अयोध्या। मसौधा क्षेत्र के खानपुर निवासी अदित्य रावत, पुत्र विनय कुमार गौतम ने जेईई एडवांस 2025 परीक्षा में शानदार सफलता हासिल की है। उन्होंने अयोध्या स्थित सिया मॉडर्न लाइब्रेरी से ऑनलाइन माध्यम द्वारा तैयारी की और सीमित संसाधनों में भी बड़ा मुकाम हासिल किया। अदित्य ने अपनी सफलता का श्रेय माता-पिता, शिक्षकों और लाइब्रेरी के शांत वातावरण को दिया। उनका कहना है कि अनुशासन, नियमित अध्ययन और कभी हार न मानने की सोच से ही यह सफलता संभव हुई। उनकी सफलता से पूरे जनपद में गर्व और प्रेरणा का माहौल है।

अयोध्या में आरटीओ बनाम विद्युत विभाग का टकराव

» अधिकारों की जंग में आमने-सामने आए दो विभाग

» तकरार की चिंगारी अब प्रशासनिक व्यवस्था पर पड़ रही भारी

स्वराज इंडिया संवाददाता

अयोध्या में आरटीओ और विद्युत विभाग के बीच जारी तनातनी अब सरकारी ईगो वॉर का रूप ले चुकी है। एक ओर है क्षेत्रीय परिवहन कार्यालय जिसने फिटनेस सर्टिफिकेट न होने पर विद्युत विभाग की गाड़ी जब्त कर दी, तो दूसरी ओर जवाबी कार्रवाई में बिजली विभाग ने आरटीओ कार्यालय का बिजली कनेक्शन काट दिया। यह वाकया न सिर्फ दो विभागों की आपसी खींचतान को उजागर करता है, बल्कि यह भी सवाल खड़ा करता है कि जब सरकार के अंग ही एक-दूसरे से टकराने लगें, तो जवाबदेही किसकी होगी?

कैसे शुरू हुआ विवाद?-पूरा विवाद एक बोलेरो वाहन यूपी 42-एएल 3460 से शुरू हुआ, जो विद्युत उपखंड अधिकारी मिल्कीपुर अमित कुमार सिंह के अधीन कार्यरत थी। आरटीओ अयोध्या के अधिकारी राजेश प्रताप सिंह ने बताया कि गाड़ी पर 20 दिन पहले भी चालान काटा गया था। चालक को जरूरी दस्तावेज दुरुस्त करने के निर्देश दिए गए थे, पर नियमों की अनदेखी जारी रही। नतीजा- गाड़ी जब्त कर ली गई।

जवाब में %लाइट आउट-इस कार्रवाई से तिलमिलाए विद्युत विभाग ने पलटवार करते हुए ऋक्षह्व कार्यालय का बिजली कनेक्शन काट दिया। विभाग का कहना है कि 4,89,693 रुपये का बिल बकाया है और भुगतान के बिना बिजली सप्लाई बहाल नहीं की जाएगी। इस फैसले से आरटीओ कार्यालय में कार्य पूरी तरह जनरेटर के सहारे चल रहा है।राजेश प्रताप सिंह का कहना है, सरकारी विभागों में वर्ष के अंत में सामूहिक बिल भुगतान की प्रक्रिया होती है। बिना सूचना के बिजली काटना दुर्भावना दर्शाता है।

कागज पर कानून, जमीन पर बदले की भावना-मामले में दोनों पक्ष कानून

और नियमों की दुहाई दे रहे हैं, लेकिन हकीकत में यह कागजी लड़ाई अब व्यक्तिगत टकराव की शक्ल लेती दिख रही है। स्थानीय सूत्रों का कहना है कि अब आरटीओ विभाग विद्युत विभाग की गाड़ियों की चेकिंग को प्राथमिकता देगा, वहीं बिजली विभाग भी आरटीओ कार्यालय का लोड और कनेक्शन खंगालने में जुट जाएगा।

प्रशासनिक असर और जनता की चर्चा-इस तकरार का सीधा असर प्रशासनिक कार्यों पर पड़ने लगा है। आरटीओ कार्यालय में ड्राइविंग लाइसेंस, फिटनेस और टैक्स संबंधित कार्यों में देरी हो रही है। जनता के लिए ये दोनों विभाग जरूरी सेवाओं से जुड़े हैं, ऐसे में ये टकराव सार्वजनिक असुविधा में बदलने लगा है। स्थानीय लोगों के बीच चर्चा है ऋअगर यही हाल रहा, तो क्या अब विभागीय फाइलें भी लालटेन की रोशनी में चलेंगी?

यह घटना दर्शाती है कि विभागीय अहंकार किस तरह संस्थागत दक्षता को प्रभावित कर सकता है। सवाल ये भी है कि जब सरकारी विभाग ही एक-दूसरे को सबक सिखाने पर आमादा हो जाएं, तो जनता किससे उम्मीद करे? इस विवाद ने अयोध्या में प्रशासनिक समन्वय की स्थिति पर बड़ा सवाल खड़ा कर दिया है – क्या अब हर विभाग अपनी ताकत दिखाकर काम करेगा या नियमों का सम्मान करते हुए संवेदनशील सहयोग की ओर लौटेगा?

एलडीए की अनंतनगर आवासीय योजना की लॉटरी 10 जून को

लखनऊ में प्लॉटों के लिए 13,031 लोगों ने ऑनलाइन आवेदन किया है

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

लखनऊ। एलडीए की अनंतनगर आवासीय योजना के पहले चरण में 334 प्लॉटों के लिए 10 जून को इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में लॉटरी होगी। इन प्लॉटों के लिए कुल 13,031 लोगों ने ऑनलाइन आवेदन किया है। इस बीच शुक्रवार को डीएम विशाख जी ने योजना स्थल पर विकास कार्यों की समीक्षा की और भूमि अधिग्रहण की जानकारी ली।

डीएम के निरीक्षण के दौरान एलडीए वीसी प्रथमेश कुमार ने बताया कि मोहान रोड पर 785 एकड़ में अनंत नगर योजना विकसित की जा रही है। इसमें करीब 1.5 लाख लोगों के लिए आवासीय और व्यावसायिक सुविधाएं होंगी। योजना में 2,100 आवासीय और 120 कमर्शल प्लॉटों के अलावा ग्रुप हाउसिंग वाले 60 प्लॉटों पर कुल 10,000 फ्लैट बनेंगे। इनमें ईडब्ल्यूएस और एलआईजी वर्ग के कुल 5,000 फ्लैट होंगे। इसके अलावा पीएम आवास योजना के तहत भी फ्लैटों का निर्माण करवाया जाएगा।

संशोधन का मिलेगा अवसर

वीसी ने बताया कि प्लॉटों के लिए आवेदन करने वालों को 4 जून 2025 तक आवेदन की गलतियां सुधारने का मौका दिया जाएगा।

लॉटरी प्रक्रिया के लिए आवेदकों को सूचना भेजी जा रही है।

चौड़ी होगी कनेक्टिंग रोड

निरीक्षण के दौरान डीएम ने किसान पथ को जोड़ने वाली सड़क को 24 मीटर चौड़ी करने के निर्देश दिए हैं। इसके साथ मुआवजा वितरण में तेजी लाने के लिए राजस्व कर्मियों की ड्यूटी लगाकर किसानों से आवश्यक फॉर्म भरवाने का आदेश भी दिया।

यूपी में डीजी रैंक के तीन अधिकारियों का तबादला

नीरा रावत को मिली बड़ी जिम्मेदारी
प्रशांत कुमार के रिटायरमेंट होने के बाद नए डीजीपी ने पकड़ी रफ़्तार

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश पुलिस के मुखिया रहे प्रशांत कुमार के रिटायर होने के बाद पुलिस विभाग को अपना नया डीजीपी मिल गया है। सीनियर आईपीएस राजीव कृष्ण को कार्यवाहक डीजीपी बनाया गया है। उधर प्रशांत कुमार के रिटायर होने के बाद दो एडीजी रैंक के अधिकारियों को डीजी रैंक पर प्रमोशन भी मिल गया है। इसी क्रम में सोमवार को तीन डीजी रैंक के अधिकारियों को नई नियुक्ति सौंप दी गई है। डीजी पद पर प्रमोशन पाने वाली नीरा रावत को डीजी श्वह्ड्ढ के साथ क्क112 का अतिरिक्त प्रभार दिया गया है।

तबादलों के क्रम में 1991 बैच के सीनियर आईपीएस पीसी मीणा को वर्तमान पद के साथ-साथ महानिदेशक कारागार प्रशासन एवं सुधार सेवाएं उप्र. का अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है। पीवी रामशास्त्री के रिटायर होने के बाद से यह पद खाली चल रहा था।

पीसी मीणा मौजूदा समय में पुलिस महानिदेशक सीएमडी पुलिस आवास निगम उप्र. लखनऊ की जिम्मेदारी संभाल रहे थे। इसी तरह 1992 बैच के सीनियर आईपीएस आशुतोष पांडेय को भी बड़ी जिम्मेदारी सौंप दी गई है। आईपीएस आशुतोष पांडेय को पुलिस महानिदेशक टेलीकॉम उप्र. बनाया गया है।